The Academic
International Journal of Multidisciplinary Research
An Online Peer Reviewed / Refereed Journal
Volume 1 | Issue 1 | April-June 2023
Website: www.theacademic.in

भारतीय परंपराओं में मानवतावाद

डॉ. अशोक पांडुरंग सरवदे
सहायक प्राध्यापक, पाली एवं बुद्धिझम विभाग, डॉ. बाबासाहेब आंबेडकर मराठवाडा विश्वविद्यालय, औरंगाबाद (महाराष्ट्र)

ARTICLE DETAILS

Research Paper

Article History
Received : April 10, 2023
Accepted : June 02, 2023

Keywords :
भारतीय परंपरा, हिंदू धर्म, बौद्ध धर्म, जैन धर्म, सिख धर्म

ABSTRACT

भारतीय परंपराओं में मानवतावाद की सरोकार हमें हिदू धर्म, बौद्ध धर्म, जैन धर्म तथा शिख धर्म में मिलती है। इन सभी प्रमुख धर्म ने मानवतावादी नैतिक मूल्यों का स्वीकार किया है। इन सभी धर्म की दार्शनिक विचारधारा के अंतर्गत मानव की उत्पत्ती, प्राकृतिक परिवेश में उसके विकास, ब्रह्मांड के साथ-साथ उसके संबंध उसके व्यक्तित्व, स्वभाव तथा आचरण का वस्तुपरक अध्ययन है। नैतिक मूल्यों को स्वीकार करनेवाला प्रत्येक धर्म मनुष्य के व्यक्तित्व एवं अनुभव को सर्वाधिक महत्व देता है। यह दर्शन मानव स्वभाव पर आधारित है। इस प्रकार हिंदू, बौद्ध, जैन तथा शिख धर्म में प्रत्येक मनुष्र का मूल्यांकन केवल मनुष्य होने के कारण किया जाता है। मानवतावाद का प्रमाण यह है कि, कपट, सहिष्णुता, तितक्षा, करूणा और अपरिग्रह की मान्यता एक अनिवार्य शर्त है। हम देखते हैं कि, हिंदू धर्म, बौद्ध धर्म एवं शिख धर्म दर्शन इन प्रमुख मानवतावादी सिद्धांतो से भरे पड़े हैं।

भूमिका :

भारत एक धर्मनिरपेक्ष देश है जिसमें अनेक धर्मों के लोग निवास करते हैं। अनेकता में एकता का नारा भारत में काफी समय पहले से दिया जाता रहा है। वर्तमान समय में भारत में नौ प्रमुख धर्म स्थित है। इन सभी धर्म मानवतावाद की शिक्षा मिलती है। प्रत्येक धर्म में अनुयायीओं के लिए नियम निर्धारित किए जिसके आधार से जन्म से मृत्यू के पश्चात भी निर्धारित किए गए नियमों का पालन करना अनिवार्य है। अगर मनुष् के जीवन में से धर्म तत्व

Corresponding Author : sarwade2@gmail.com

को अलग कर दिया जाए तो मनुष्य और अन्य जीवों में कोई अंतर नहीं रह जाएगा। क्योंकि धर्म का अर्थ ही धारण करना है। कर्तव्य, अहिंसा, न्याय, सदाचरण-सदगुण आदि को धारण करना ही धर्म कहलाता है। जो धर्म मानव को मानव बनाता है वही धर्म है। वर्तमान समय में भारत के प्रमुख धर्म हिंदु, बौद्ध, जैन तथा शिख धर्म माने जाते हैं। इन सभी प्रमुख धर्म ने मानवतावाद को स्वीकार कर मनुष्य को मानवतावाद की राह चलने का उपदेश किया है।

धर्म सामाजिक व्यवस्था के नियामक तत्व के अर्थ में अधिक प्रचलित है। यही धर्म मानवीय समाज के रक्षणार्थ एवं कल्याण हेतू महत्वपूर्ण भूमिका निर्वाह करता है। मानवतावाद के मूल में भी मानव कल्याण निहित होता है। अत: धर्म एवं मानवतावाद के सबंध में मिमांसा अत्यंत प्रासंगिक है। इसमें भारतीय संस्कृति एकता, अखंडता एवं सहिष्णूता का संदेश देती है। आत्मसातिकरण भारतीय धर्म परंपरा का विलक्षण गुण है। इसलिए हिंदू धर्म के ग्रंथों में कहा है - 'एकं सदविप्रा बहुधा वदन्ति' यह हमारा आदर्श रहा है। साथ ही 'सर्वे भवन्तु सुखिन: सर्वे सन्तु निरामय: तथा वसुधैंव कुटुम्बकम' यह हमारे आचरिक सिद्धांत रहे है। इन सबके मूल में हमारी धर्म भावना है।

प्रस्तुत शोध आलेख का उद्देश्य यह है की, भारतीय परंपराओं में मानवता की अवधारणा की व्याख्या करना तथा भारत में स्थित चार प्रमुख धर्म है जिसमें मानवतावादी तथा जन कल्याणकारी उपदेश को उजागर करना है तथा उनका विश्लेषण करना है।

मानवतावाद एक ऐसा दृष्टिकोन है जिसमें मानवतावाद को प्रधानता दी जाती है और जिसके अंतर्गत समाज की प्रत्येक प्रक्रिया की व्याख्या एवं मूल्यांकन इस दृष्टिकोन से किया जाता है कि वह कहाँ तक मानवीय हितों से संबंधित है। जहाँ व्यक्ति के स्वयं के विकास, सुख तथा आत्म अनुभूति पर बल दिया जाता है वही मानवतावाद का जन्म होता है। मानवतावाद के बारे में ब्रूबेकर कहते हैं कि, मानवतावाद मानव स्वभाव और मानव दृष्टिकोण पर बल देता है। प्राचीन मानवतावादी मानवीय विवेक बुद्धि को स्थिर एवं अपरिवर्तनशील मानते हैं जबकि

आधुनिक मानवतावादी यह स्वीकार करते हैं कि, मनुष्य की तर्कबुद्धि या विवेक में सुधार हो सकता है। भारतीय दार्शनिकों का मानवतावाद प्राचीन काल से ही प्रचलित रहा है। प्राचीन समय में भी हमारा यह ध्येय रहा है कि सभी मानव सुखी रहे। इसी को हम मानवतावाद कहते हैं। हिंदू ग्रंथ में इसलिए यह कहा गया है कि -

"सर्वे भवन्तु सुखिन: सर्वे सन्तु निरामय"

इसी संदर्भ में बौद्ध धर्म में कहा है कि, सब्बे सत्था सुखि होन्तु। सभी प्राणी सुखी होवे। इस प्रकार सभी धर्म में कहीं न कहीं मानवीय कल्याण तथा मानवतावाद को उजागर करने का प्रयास किया है। उपरोक्त धर्म में एक-एक कर हम मानवतावाद को उजागर करेंगे।

हिंदू धर्म परंपरा में मानवतावाद :

हिंदू धर्म का जो आज का स्वरूप हम देख रहे हैं वह न जाने कितने ऋषिओं, चिंतको, विचारकों और अनुसंधानकर्ताओं के युगो-युगों के प्रयत्नों का परिणाम है और जिसे हम हिंदू संस्कृति कहते हैं वह इसी अनावरत ज्ञान साधना से निर्मित हुई है। वर्तमान समय में अनेक लोग हिंदू धर्म के नाम पर नफरत और हिंसा भड़का रहे हैं। यह हिंदू धर्म का मूलतत्व नहीं है। मानवता और प्रेम ही हिंदू धर्म का मूलतत्व है। जब से हिंदू धर्म का राजनीति के साथ घालमेल हुआ है तब से हमें हिंदू धर्म में कट्टरता एवं द्वेष दिखाई देता है। हिंदू धर्म अलग-अलग समूहों में बटा होने के कारण कहीं-कहीं अंधश्रद्धा जैसी अमानवीय प्रथा भी नजर आती है। हिंदू धर्म के इतिहास की जानकारी प्रस्तुत करनेवाले अनेक महान ग्रंथ हैं, जिनमें एक ओर मानवतावाद का दर्शन है तो दूसरी ओर वही ग्रंथ साधारण मनुष्य के हित के विरोध में दिखाई देता है। इसका मूल कारण है हिंदू धर्म में निहित अलग-अलग पंथ और उनकी विचारधारा, इसलिए स्वामी विवेकानंद जी ने हिंदू धर्म के नाम पर समाज में व्याप्त अवांछित प्रथाओं और रस्मों-रिवाज तथा अंधश्रद्धा का कड़ा विरोध किया था।

बौद्ध और धर्म में मानवतावाद :

बौद्ध और जैन धर्म यह दोनो धर्म मानवातावादी विचारों से भरे पड़े है। परस्परोपग्रहो जीवानाम जियो और जीने दो यह सिद्धांत इन दर्शन की मुख्य धारा है। बौद्ध दर्शन में इश्वर की सत्ता के साथ-साथ आत्मा के अस्तित्व को भी अमान्य किया है। मनुष्य के वर्तमान जीवन को सर्वोपरी मानकर उसे दु:खमुक्त करने के लिए आष्टांगिक मार्ग बताया है। बौद्ध दर्शन में अलौकिक शक्ति तथा कर्मकांडों का खंडन करके आत्म निर्भर बनाने की प्रेरणा दी गई है जो मानवतावाद के लिए अत्यंत महत्वपूर्ण है। बुद्ध ने मनुष्य को एक नई जीवन दृष्टि दी है। जैन दर्शन श्रमण परंपरा का प्रतिनिधि दर्शन है यह धर्म सुधार के आंदोलन के रूप में विकसित होने के कारण नैतिकता पर विशेष बल देता है।

बौद्ध तथा जैन धर्म में निहित अहिंसा तत्व को विश्व के सभी धर्म दर्शन ने स्वीकार किया है। भारतीय दर्शन के विकास में अहिंसा की स्थापना में बौद्ध तथा जैन दर्शन की मुख्य भूमिका है। जैन दर्शन ने 'अहिंसा पमोधर्म:' का उद्घोष किया है जिसे परवर्ती सभी दर्शनों ने स्वीकार किया है। बौद्ध धर्म में 'अत्त दिप भवो' तथा जैन धर्म में अत्मोन्नति का एक ही अर्थ है। यह सभी प्राणियों पर लागू होता है। ब्राह्मण हो या शूद्र, महिला हो या पुरूष बुद्ध तथा जैन धर्म का यह दृष्टिकोण अत्यंत व्यवहारिक है। जातिवाद तथा लिंगभेद जैसी अमानवीय व्यवस्था का विरोध बौद्ध तथा जैन धर्म में किया है। इसलिए बौद्ध तथा जैन धर्म को मानवतावादी धर्म कहा जाता है।

सिख धर्म में मानवतावाद :

सिख धर्म सादगी, सेवा और भक्ति पर आधारित है। सिख धर्म की सरलता यह है कि वह मानवतावाद में विश्वास करता है। जिसमें कहा गया है कि "सभी एक ही निर्माता के है (कुदरत दे सब बंदे) वंड छको के माध्यम से सौहार्द के साथ रहने वाले समुदाय के लिए लंगर के

रूप में अनुयायियों द्वारा दान के माध्यम से और योग्य कारणों के लिए सिख समुदाय में दूसरों की मदद करना स्पष्ट है। सिख धर्म में नि:स्वार्थ, सेवा तथा अपनी कमाई और कौशल्य साझा करने के लिए अनुयायी तत्पर रहते हैं। नानक देव जी तथा सिख धर्म दर्शन में कहा है कि, धार्मिक होने से पहले मानव की मानवतावादी गुणों को धारण करना जरूरी है। जितनी देर तक व्यक्ति मानवतावादी पहुँच नहीं अपनाता, उतनी देर तक वह धार्मिक नहीं हो सकता। विश्व का प्रत्येक मनुष्य चाहे वह जहाँ कहीं भी रहता हो वह किसी भी जाति, धर्म रंग, रूप, नस्ल का हो, यदि वह मानवतावादी सोच पर पहरा देता है तो सहज ही वह गुरू का सच्चा सिख कहलाएगा।

श्री गुरू नानक देव लोगों को अध्यात्मिकता का जीवन जीने, जाति को त्यागने और इश्वर में विश्वास रखने की शिक्षा देते हैं। वह कहते हैं कि -

"जाति में क्या योग्यता होती है।

भितर सत्य की खोज करें।"

उनके मानवतावादी दर्शन का आम जनता पर अत्याधिक प्रभाव पड़ा। मानवता की सेवा को ही अपने जीवन का अंग बनाने की शिक्षा दी। इसलिए सिख धर्म मानवतावादी कहलाता है।

वस्तुत: भारतीय समाज चिंतन में धर्म नैतिकता का अधिष्ठाता है, जिसमें मानवता का विकास होता है। इसलिए मानवतावाद में धार्मिक दृष्टीकोण और अलौकिक विचार पद्धतियों को हीन माना जाता है और तर्कशक्ति, न्यायिक सिद्धांतों और आचारनीति पर जोर देता है। इसी मानवतावाद के मूल में मानव कल्याण निहित है।

निष्कर्ष :

मनुष्य के अस्तित्व को महत्व देना ही मानवतावाद है। भारतीय परंपराओं में मानवतावाद**,** दर्शन की एक ऐसी विचारधारा है जिसके अंतर्गत मनुष्य तथा उसकी समस्याओं के विवेचन को सर्वाधिक महत्व दिया गया है। मानवतावाद में मनुष्य को ही केंद्रीय स्थान मिला है। मानवतावाद यह विचारधारा मनुष्य के हितों से संबंधित है। मानवतावाद मनुष्य के कल्याण एवं

सर्वतोमुखी विकास की दृष्टी से जाति, वर्ग, संप्रदाय को अधिक महत्व नहीं देता इस प्रकार भारतीय परंपराओं में स्थित मनुष्य धर्म में मानवतावाद का मुख्य केंद्र मनुष्य का वर्तमान जीवन और उसका उच्चतम निर्माण है।

संदर्भ :

1. मानवाधिकार जेन्डर एवं पर्यावरण - बिसवाल तपन, बुक्स प्राईवेट लिमिटेड, नई दिल्ली, 2008
2. मानवाधिकार एवं भारतीय न्याय पालिका की भूमिका - काढिड अमरसिंह, सुमन प्रकाशन उदयपूर, 1983
3. राजनीति शास्त्र के मूल आधार - चढ्ढा पी.के., साहित्य भवन, आगरा, 1993
4. Journal of Education & Psychological Research (vol-8-No. I) Jan - 2018
5. जैन धर्म में तनाव और तनावमुक्ति - डॉ. तृप्ति जैन, प्राच्या विद्यापीठ, शाजापुर, 2014
6. बौद्ध ज्ञान - मीमांसा - हरीप्रकाश शर्मा, 2007
7. भारतीय दर्शन - आचार्य बलदेव उपाध्याय